श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

थाली भर कर ल्याई रे खीचड़ो, ऊपर घी की बाटकी,
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की,
या करमा बेटी जाट की.....

बाबो म्हारो गाँव गयो है, ना जाणे कद आवेलो,
ऊके भरोसे बैठ्यो रह्यो तो, भूखो ही रह जावेलो।
आज जिमाऊं तने खीचड़ो, काल राबड़ी छाछ की,
जीमों म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की,
या करमा बेटी जाट की.....

बार बार मंदिर ने जड़ती, बार बार मैं खोलती,
कईया कोनी जीमे रे मोहन, करड़ी करड़ी बोलती।
तू जीमे लो जद मैं जीमूं, मानूं ना कोई लाड की,
जीमों म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की,
या करमा बेटी जाट की.....

परदो भूल गई सांवरिया, परदो फेर लगायो जी,
धावलीया की ओल बैठ कर, श्याम खीचड़ों खायो जी,
भोला भाला भगता स, सांवरिया कइयां आंट की,
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की,
या करमा बेटी जाट की.....

भक्ति हो तो करमा जैसी, सांवरिया घर आवेला,
सगला भक्त प्रभु का मिलकर हर्ष हर्ष गुण गावे ला।
सांचों प्रेम प्रभु से हो तो, मूरत बोले काठ की।
जीमों म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की,
या करमा बेटी जाट की.

॥ गीतम् 22 ॥

(अथ द्वाविं(म्)शतितमः(फ्) प्रबन्धो वराडीरागेण रूपकताले गीयते)

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारविभङ्गम् ।
जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतरलिततुङ्गतरङ्गम् ॥
हरिमेकरसं(ञ्) चिरमभिलषितविलासं(म्)
सा ददर्श गुरुहर्षवशं(वँ)वदवदनमनङ्गनिवासम् ॥ 1॥

हारममलतरतारमुरसि दधतं(म्) परिरभ्य विदूरम् ।
स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् ॥ 2॥ हरिमेकरसं

श्यामलमृदुलकलेवरमण्डलमधिगतगौरदुकूलम् ।

नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभरवलयितमूलम् ॥ 3॥ हरिमेकरसं

तरलदृगञ्चलचलनमनोहरमदनजनितरतिरागम् ।
स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् ॥ 4॥ हरिमेकरसं

वदनकमलपरिशीलनमीलितमिहिरसमकुण्डलशोभम् ।
स्मितरुचिरुचिरसमुल्लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ॥ 5॥ हरिमेकरसं

शशिकिरणच्छुरितोदरजलधरसुन्दरकुसुमकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमण्डलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ॥ 6॥ हरिमेकरसं

विपुलपुलकभरदन्तुरितं(म्) रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ॥ 7॥ हरिमेकरसं

श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारम् ।
प्रणमत हृदि सुचिरं(वँ) विनिधाय हरिं(म्) सुकृतोदयसारम् ॥ 8॥
हरिमेकरसं